नैतिकता की धारणा से शांति एवं सौहार्द की स्थापना होगी

- चार दिवसीय कॉन्फ्रेंस मे विभिन्न वर्कशॉप व खुले सत्र पर हुआ गहन चिंतन।
- ब्रीजींग द गैप्स बीटवीन स्प्रीच्युल एण्ड लीगल लॉस।
- परमात्मा के साथ संबंधों की अनुभूति।
- समाज में अहिंसा व शांति की स्थापना में न्यायविद से जुड़े लोगों की भूमिका।

ज्ञानसरोवर। दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करतें हुए गोवा के राज्यपाल वीर वांचू , सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति गोपाल गौड़ा, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु. जयप्रकाश, ब्र.कु. बी एल महेश्वरी,ब्र.कु.लता तथा अन्य।

ज्ञानसरोवर। गोवा के राज्यपाल महामहिम भरत वीर वांचू ने ब्रह्माकुमारीज न्यायविद् प्रभाग द्वारा 'न्यायिक प्रक्रिया में बेहतर प्रशासन के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि आम व्यक्ति को शांति, प्रेम एवं आनंद से जीने की शिक्षा यह संस्थान वर्षो से देता आ रहा है इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। ब्रह्माबाबा की महानता एवं शिक्षाओं को अपनाकर सभी दादियों एवं दीदियों ने महान सेवा की है। अगर हम सभी अच्छा काम कर सकें अपने दैनिक जीवन में तो संसार सुंदर बन जाएगा। हमने ऐसे देश में जन्म लिया है जहाँ आध्यात्मिकता हर ओर महकती है। अपने इसी बल के आधार पर हमने विदेशी शासकों को देश से भगा दिया। अपना लोकतंत्र कायम किया। न्यायपलिका ने देश को बनाने में महती भूमिका का निर्वाह किया है। हमें अपनी न्यायपालिका पर गर्व है। पूर्व में अनेक न्यायविदों ने राजनीतिज्ञों के रूप में देश की सेवा की है। उत्तम न्याय पालिका आज की मांग है। आज कभी कभी आम व्यक्ति को न्याय नहीं मिल पा रहा है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारा महान देश इन कमियों से पार पा लेगा ऐसा मेरा विश्वास है। सरकार को चाहिए कि वे न्यायपालिका को सशक्त करने की दिशा में कदम उठायें। न्यायविदों को नैतिकता की धारणा करनी ही होगी ताकि शांति एवं सौहार्द की स्थापना की जा सके। जब इसमें कोई कमी होती है तो समस्या आती है। मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की अवहेलना से न्यायपालिका का स्तर नीचे आ सकता है। ब्रह्माकुमारीज ने आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए जो कदम उठाया है वह सराहनीय है। इनकी संस्कृति, स्वागत विधि से मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति गोपाल गौड़ा ने कहा कि भारतीय न्यायपालिका विश्व की सुंदरतम न्यायपालिका है। अमेरिका सहित दुनिया के तमाम देश इस बात को मानते हैं। अधिकांश देश ऐसा मानते हैं कि कानून की रक्षा करने में भारतीय न्यायपालिका पूर्णत: सक्षम है। न्यायाधिशों एवं अधिवक्ताओं को देश की जनता का रक्षक बन कर उनकी मदद करनी होगी। 58 प्रतिशत गरीब जनता का सहायक सिर्फ सरकार नहीं बन पाएगी। आध्यात्मिक रूप से सशक्त न्यायपालिका एवं सहयोगी ही ऐसा कर पाएंगे। बहनों एवं माताओं को आज भी अधिकार नहीं दिये जा रहे हैं। जिन्हें हम देवियाँ कहते हैं उन देवियों के अधिकारों को छीना जा रह है। इसका प्रतिकार अवश्य किया जाना चाहिए। बार काउंसिल के सदस्यों एवं न्यायाधिशों को इसपर विचार करना होगा। बराबरी का अधिकार दिलाना ही आध्यात्मिकता है। सामाजिक कल्याण के लिए काम करना ही आध्यात्मिक होना है। गरीबों दलितों एवं बेसहारा लोगों की समस्याओं को आवाज देना भी आध्यात्मिकता है। ईमानदारी से अपना काम करना भी आध्यात्मिकता ही है। उन्होने ब्रह्माकुमारीज की भूरि भूरि प्रशंसा की कि आपने इतनी सुंदर व्यवस्था की है कि शब्दों में इसका वर्णन करना असंभव है।

न्यायविद् प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि यहाँ हम सभी आध्यात्मिकता को अपनाने का गुर सीखेंगे। अभी हमें विस्तार को सार में समाना है। यह संस्थान हमें यही सिखाता है। सभी बातों को बिंदू रूप में बीज रूप में समझना ऐसा है कि काम क्रोध लोभ मोह एंव अहंकार को समाप्त करना ही आध्यात्मिकता है। अष्ट शक्तियों को अपनाने से ही जीवन में महानता आती है। यही आध्यात्मिक सशक्तिकरण है। परमात्मा हम सभी बच्चों से पवित्र दुनियाँ की स्थापना का काम करवा रहे हैं।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.बी एल माहेश्वरी ने कहा कि न्यायिक प्रक्रिया में बिना आध्यात्मिक सशक्तिकरण के उत्तम प्रशासन मुश्किल होगा।

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता ब्र.कु.जयप्रकाश ने कहा कि आज की आवश्यकता है कि सभी का आध्यात्मिक सशक्तिकरण अवश्य से अवश्य किया जाना चाहिए।

उड़ीसा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं उड़ीसा शासन के लोक शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष आर एन विस्वाल ने कहा कि सबसे पहले ईश्वर ने यह दुनियाँ एवं प्रकृति का निर्माण किया और उसके बाद अपने जैसे मनुष्यों को बनाया। अत: खुश रहना एवं सुखी रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। एक अशांत मस्तिष्क न्याय नहीं कर पाएगा। अत: यह सभी का दायित्व है कि शांति अपनाया जाए।

दिल्ली से पधारीं ब्र.कु.पुष्पा ने अतिथियों को राजयोग का अभ्यास करवाया। प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.लता ने कार्यक्रम का संचालन किया।

ज्ञानसरोवर। गोवा के राज्यपाल वीर वांचू , का स्वागत करते हुए न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह साथ में खड़े ब्र.कु. बी एल महेश्वरी ।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें ।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।